बल्कि सारे समाज ने निंदा बरसाई, उनका अपमान किया लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि इस वैर-विरोध के बीच में ही ब्रह्मा बाप ने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की विधि द्वारा परमपिता परमात्मा से ज्ञान, गुण और शक्तियों को संपूर्ण रूप से धारण किया और सबसे पहले संपूर्णता के शिखर पर पहुँच गए। वे ही इस सृष्टि नाटक में मानव से देवमानव बनने का पहला उदाहरण बने। उन्होंने कभी किसी से किनारा नहीं किया, न सेवा का या सेवास्थान का त्याग किया। अपमान उनके लिए कभी भी रुकावट नहीं बना बल्कि पुरुषार्थ को तीव्र बनाने का एक साधन बना।

इसलिए अब इतिहास हमें हिम्मत दिलाते हुए कह रहा है कि अपमान इतनी भयानक चीज़ नहीं है जो उससे डरें। **जैसे हीरा, सोना आदि गहरी दबी अमूल्य धातुओं को निकालने के लिए विस्फोटक का इस्तेमाल करते हैं वैसे ही अपमान भी एक विस्फोटक है जो देह अहंकार के पत्थर को तोड़कर आत्मा के निजी दिव्य संस्कार को प्रत्यक्ष करता है।**

जो भी भाई-बहनें इस समस्या का सामना कर रहे हों, वे अपने को बदनसीब या दुखी समझकर व्यक्ति, सेवा या सेवास्थान का त्याग करने के बजाय अपने को खुशनसीब समझें क्योंकि हमारी महानता को प्रत्यक्ष करने की ज़िम्मेदारी उन्होंने अपने आप उठा ली है इसलिए हम उनका शुक्रिया अदा करेंगे। सहन शक्ति, समाने की शक्ति, स्नेह एवं शुभभावना के प्रयोग द्वारा हम अपमान को अपनी आध्यात्मिक साधना में तीव्रता लाने का एक साधन बनाकर स्नेहसागर शिव पिता को प्रत्यक्ष करेंगे।

अपमान को सकारात्मक रीति से स्वीकार करने के फायदे

- अपमान से वैराग वृत्ति की ऐसी ज्वाला प्रज्वलित होगी जो एक ही पल में लगाव-झुकाव और मोह की सारी रस्सियाँ काटकर हमें व्यक्ति, वस्तु, वैभवों के बंधन से मुक्त कर देगी।
- कोई हमारा अपमान कर रहा है और हम उस वक्त शांत रहकर उसे समा रहे हैं तो अन्य आत्मायें जो वहाँ हाज़िर हैं उनको भी तनाव की स्थिति में शांत रहने की प्रेरणा मिलेगी।
- तनावपूर्ण वातावरण में भी मानसिक स्थिति को संतुलन में रखकर निर्णय लेने की शक्ति बढ़ेगी।
- किसी भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रहेगी अर्थात् नि:स्वार्थ भाव से कर्म करने का मनोभाव जागृत होगा।
- निंदा को समाना भी कर्मभोग को चुक्तू करने की एक विधि है।
- अपमान से हमारे अंदर सहन करने की शक्ति और समाने की शक्ति की गहरी धारणा होती है।
- अपकारियों पर भी उपकार करने का विशाल मनोभाव जागृत होता है।
- समय, स्थान और व्यक्ति को परखकर संबंध-संपर्क में आने की कला प्राप्त होती है।

इस गुह्य राज़ को समझाने के लिए ही ज्ञान-गुण-शक्तियों के सागर परमपिता परमात्मा ने यह महावाक्य उच्चारा है, 'निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सो होय।' ❖

स्वर्ग का द्वार है.. पृष्ठ 11 का शेष

मुझे परमात्मा से मुफ़्त में मिली और जब अपने अंदर झांकती हूँ तो इनका एक बहुत बड़ा कुण्ड महसूस होता है। इसी कारण मुझे भीतर की ओर झांकने की आदत पड़ गई है। बार-बार मैंने अपने अंतर को टटोला और अपने भीतर से कभी सुख का खज़ाना, कभी शांति का खज़ाना, कभी प्रेम का खज़ाना निकाला और लोगों को बाँटा। जिनको बाँटा, उन्होंने मुझे चार गुना अधिक दिया, फिर मैंने लोगों को आठ गुणा दिया, फिर मुझे सोलह गुना अधिक मिला। दुनिया के हर कोने में मुझे अपने लोग, सहयोग देने वाले लोग मिले। संसार में रहने वाला हर मनुष्य मुझे अपना नज़र आया। जब सब अपने नज़र आए तो न ईर्ष्या रही, न द्वेष, न रहा भय।'' इस प्रकार, आध्यात्मिक शृंगार उसकी कमज़ोरियों रूपी कालिमा को धो-पोंछकर उसे सदा खुशहाल बना देता है। ❖